ASTRO ARPITA NATH

वैदिक ज्योतिष में विपरीत राजयोग

Arpita Nath द्वारा · उन्नत ज्योतिष नोट्स · 2026-09-11

वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में, अधिकांश राजयोग (शाही संयोग) 1वें, 5वें या 9वें भाव जैसे शक्तिकेंद्रों में बैठे मजबूत, शुभ ग्रहों द्वारा बनते हैं। लेकिन विपरीत राजयोग पूरी तरह से एक भिन्न, विरोधाभासी सिद्धांत पर कार्य करता है।

विपरीत का अर्थ है "उल्टा" या "प्रतिलोम"। यह अनूठा योग यह सिद्ध करता है कि कभी-कभी, जीवन की सबसे बड़ी छलांगें शांत समय में नहीं आतीं - वे तब आती हैं जब कोई बाहरी संकट पुराने ढांचे को नष्ट कर अप्रत्याशित विजय के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।

मूल नियम: हानि से हानि का निरसन (Loss Cancels Loss)

एक जन्म कुंडली (Kundli) में, दुष्टस्थान भाव - छठा (शत्रु, ऋण, मुकदमेबाजी), आठवां (अचानक आघात, आयु, लांछन/अपवाद) और बारहवां (हानि, अलगाव, विदेश निर्वासन) - कठिन स्थितियां माने जाते हैं।

विपरीत राजयोग तब बनता है जब किसी दुष्टस्थान भाव का स्वामी किसी अन्य दुष्टस्थान भाव में स्थित हो, बशर्ते वह ग्रह एक साथ शुभ भावों से संबंधित न हो।

कानूनी/गणितीय रूपक: जिस प्रकार दो ऋणात्मक संख्याओं का गुणनफल एक धनात्मक संख्या बनता है (- x - = +), उसी प्रकार दो नकारात्मक भावों की ऊर्जाएं एक-दूसरे को निष्प्रभावी कर एक असंभव प्रतीत होने वाली स्थिति से अप्रत्याशित सफलता का निर्माण करती हैं।

विपरीत राजयोग के 3 प्रकार

ऊर्जा का आदान-प्रदान करने वाले दुष्टस्थान स्वामियों के आधार पर, विपरीत राजयोग तीन अलग-अलग रूपों में प्रकट होता है:

1. हर्ष योग (छठे भाव का स्वामी छठे, आठवें या बारहवें भाव में)

• **ऊर्जा**: शत्रुओं, रोग और संघर्ष पर विजय प्राप्त करना।

• **परिणाम**: विरोधियों के विरुद्ध अजेयता, स्वास्थ्य में सहनशीलता और कानूनी विवादों या कॉर्पोरेट प्रतिस्पर्धा को अपने लाभ में बदलने की क्षमता प्रदान करता है।

•

प्रकटीकरण: आप एक बड़े कानूनी संघर्ष, कार्यस्थल विवाद या स्वास्थ्य संकट का सामना करते हैं - और न केवल उससे उबरते हैं, बल्कि पहले की तुलना में अधिक सामाजिक प्रतिष्ठा और वित्तीय सुरक्षा के साथ उभरते हैं।

2. सरल योग (आठवें भाव का स्वामी छठे, आठवें या बारहवें भाव में)

• **ऊर्जा**: अचानक आने वाली आपदाओं, लांछनों और बदलावों पर विजय प्राप्त करना।

• **परिणाम**: व्यापक उथल-पुथल के दौरान निर्भीक संयम, दीर्घायु, गहन अंतर्ज्ञान और अचानक वित्तीय लाभ प्रदान करता है।

• **प्रकटीकरण**: किसी कंपनी का बंद होना, बाज़ार की अचानक गिरावट या पारिवारिक पुनर्गठन आगे का एक अप्रत्याशित मार्ग प्रशस्त करता है - जिससे कोई वसीयत, बीमा भुगतान या करियर में बड़ा मोड़ मिलता है जो आपकी सामाजिक स्थिति को ऊपर उठाता है।

3. विमल योग (बारहवें भाव का स्वामी छठे, आठवें या बारहवें भाव में)

• **ऊर्जा**: वित्तीय हानि, अलगाव और व्यय पर विजय प्राप्त करना।

• **परिणाम**: वित्तीय स्वतंत्रता, उच्च नैतिक चरित्र, गुप्त शत्रुओं से सुरक्षा और विदेशी भूमि या स्वतंत्र उपक्रमों में सफलता प्रदान करता है।

• **प्रकटीकरण**: नौकरी का अचानक छूटना या जबरन स्थानांतरण आपको अंतरराष्ट्रीय व्यापार या दूरस्थ उद्यमिता की ओर ले जाता है, जिससे आपके धन और दीर्घकालिक स्वायत्तता में कई गुना वृद्धि होती है।

स्वर्णिम शर्तें: यह वास्तव में कब कार्य करता है?

छठे, आठवें या बारहवें भाव की हर स्थिति सिक्रिय विपरीत राजयोग का निर्माण नहीं करती है। इस योग को अपनी पूर्ण "संकट-से-विजय" क्षमता को सक्रिय करने के लिए, तीन शर्तों का पूरा होना आवश्यक है:

1. एक मजबूत लग्न (Lagna Lord): प्रारंभिक आघात को सहन करने के लिए आपको व्यक्तिगत शक्ति की आवश्यकता होती है। यदि लग्नेश कमजोर है, तो विजय प्रकट होने से पहले ही संकट जातक को परास्त कर सकता है।

2. शुभ भावों के स्वामियों के साथ कोई संबंध न होना: यदि दुष्टस्थान का स्वामी 1वें, 5वें या 9वें भाव के स्वामी के साथ युति में हो या उससे दृष्ट हो, तो यह उस अच्छे भाव को "दूषित" कर देता है, जिससे विपरीत प्रभाव की शुद्धता कम हो जाती है।

3. दशा (Dasha) का सक्रिय होना: यह योग आमतौर पर तब तक सुप्त रहता है जब तक कि आप इसमें भाग लेने वाले दुष्टस्थान स्वामी की दशा (Dasha) या अंतर्दशा में न हों।

विपरीत राजयोग हमें सिखाता है कि ब्रह्मांड की ज्यामिति में, विघटन अक्सर विस्तार के लिए एक पूर्व शर्त होता है। जब किसी कठिन गोचर या ग्रहीय चरण के दौरान जीवन आपको किसी अप्रत्याशित कोने में धकेल दे, तो याद रखें; कुछ दरवाज़े तभी खुलते हैं जब उनके चारों ओर की इमारत ढह जाती है।

---

https://astroarpitanath.com/hindi/vipreet-raja-yoga/

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।